CLASS:--12TH, HISTORY NOTES, CHAPTER:- 01

मोहनजोदड़ो की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर

मोहनजोदड़ो सिंधु के लरकाना जिले में स्थापित था। सिंधी भाषा के अनुसार मोहनजोदड़ो का अर्थ है मृतको अपना प्रेतों का टीला। यह नाम मोहनजोदड़ो के पतन के बाद इसे दिया गया। 5000 वर्ष पहले यह एक विकसित शहरा। यह सात बार स्थापित होकर पुनः नष्ट द्रःआ। इस पुरास्थल की खोज हड़या के बाद ती हुई थी रांभवतः हड़्या सभ्यता का सर्वाधिक अनोखा पक्ष शहरी केंद्रों का विकास था। ऐसे ही बद्रों में एक महत्वपूर्ण केंद्र मोहनजोदड़ो था। इसकी सुदाई रे नितिखित विशिष्टताएँ प्रकट दुई है

* सुनियोजित नगर :-

1 मोहनजोदड़ो एक विभात नाहर धा जो 125 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था। यह शाहर दो भागों में विभक्त पा| गाहर के पश्चिम में एक दुर्ग या किला था और पूर्व में भीचे एक नगर बसा आया।

2 दुर्ग की संरचनाएं काली ईटों के ऊँचे चबूतरे पर बनाई गई थी। इसमें बड़े बड़े भवन थे, जो सभवतः प्रशासनिक अथवा धार्मिक केंद्री के रूप में कार्य करते थे।

3 दुर्ग के चारों ओर ईटी की दीवार पी.जो दुर्ग को निवते शहर से अलग करती थी दुर्ग में मासक और मासक वर्ग से सबंधित लोग रहते थे।

4. निवले शहर का क्षेत्र दुर्ग की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ा था। इसमें रिहायशी क्षेत्र होते थे. जिनमें सामान्य जन अर्थात् मियी आदि रहते थे। निचले शहर के चारों ओर भी दीवार बनाई गई थी। निवले शहर में अनेक भवनो को ऊँचे चबूतरों पर बनाया गया था।

5 नगर में प्रवेश करने के लिए परकोटे अर्थात बाहरी चारदीवारी में कई बड़े बड़े प्रवेशद्वार थे।

6 नगर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में प्रवेश करने के लिए आतरिक चारदीवारी में प्रवेशद्वार थे।

7. नगर में अलग-अलग दिशा में ऊंची दीवार से घिरे हुए कई सेक्टर थे।

8. सभी बड़े मकानों में रसोईघर, स्नानागार मोचालय और कुए होते थे। सभी बड़े मकानों नया लगभग एक जैसा या एक दौरस आँगन और चारों तरफ कई कमरे।

9.घर के दरवाजे और खिड़कियाँ प्रायः सड़क की ओर नहीं खुलते थे। बड़े घरों में सामने के दरवाजे के चारों ओर एक कमरा अर्थात् पोल बना दिया जाता था ताकि सामने के मुख्यद्वार से घर के अंदर ताक झाँक न की जा सके |